प्राइमर

CSJ Counsel to Secure Justice



रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेज

रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेज का एक परिचय

रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेज: एक प्रारंभिक परिचय [1]

विषय-सूची

रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेज क्या हैं? 2
रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस के बुनियादी सिद्धांत क्या हैं? 2
रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस के अलग-अलग प्रकार क्या हैं? 2
बिना अपराध/गलती के रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस 3
रेस्टोरेटिव जस्टिस 3
नुकसान होने के बाद की रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस 4
रेस्टोरेटिव सर्कल्स और रेस्टोरेटिव जस्टिस का आपस में रिश्ता क्या है? 4
अतिरिक्त सामग्री 5

[1] Recommended citation: Counsel to Secure Justice. (2020). “Restorative Practices: A Preliminary Reading”. Accessed at: https://csjindia.org/

रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस क्या हैं?

रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस ऐसे तरीके हैं जिनका मकसद लोगों और कम्युनिटी के बीच रिश्तों को बेहतर बनाना और टूटे रिश्तों को दोबारा जोड़ना है। इनका ध्यान है हेल्दी कम्युनिटी बनाना, अपराध और गलत काम कम करना, हुए नुकसान को ठीक करना और रिश्तों को बहाल करना।

रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस के बुनियादी सिद्धांत क्या हैं?

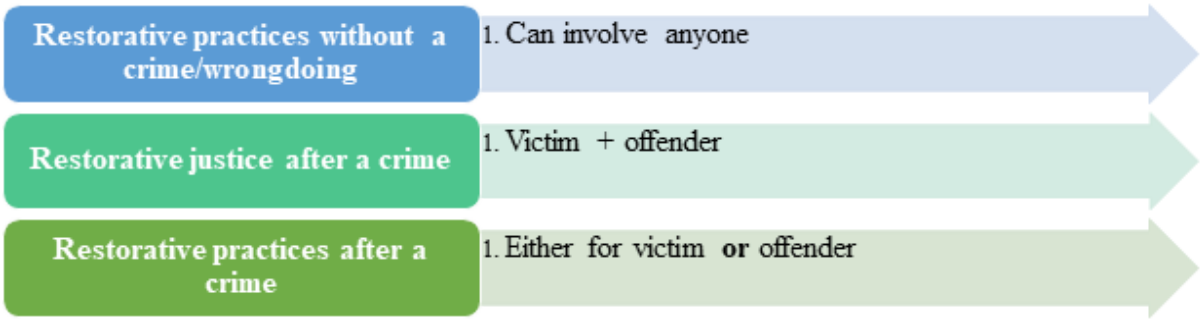
- हर इंसान की बुनियादी ज़रूरतें होती हैं (जुड़ाव, अपनापन, इज़्ज़त वगैरह)।
- जब ये ज़रूरतें पूरी नहीं होतीं, तो इंसान दूसरों को नुकसान पहुँचाने वाले काम कर सकता है (हिंसा, अपराध, झगड़ा, काम पर बुरा व्यवहार, रिश्तों में दिक्कत)।

जब नुकसान या हिंसा होती है, तो नई ज़रूरतें पैदा होती हैं –

- उस इंसान के लिए जिसने नुकसान किया,
- उस इंसान के लिए जिसे नुकसान हुआ,
- और पूरी कम्युनिटी के लिए।

- अगर इन ज़रूरतों को पूरा किया जाए, तो नुकसान की भरपाई हो सकती है:
  - जिसने नुकसान किया उसे मौका चाहिए कि वह समझ सके उसके काम का असर क्या हुआ, अपना पछतावा दिखा सके, गलती सुधारने का अवसर मिले और ऐसा सहारा जो उसे दोबारा वही गलत काम करने से रोके।
  - जिसे नुकसान हुआ, उसे ज़रूरत है कि उसका दर्द स्वीकार किया जाए, उसे माफी मिले और कभी-कभी नुकसान की भरपाई भी।

रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस के अलग-अलग प्रकार क्या हैं?



बिना अपराध या गलती के रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस

कभी-कभी रेस्टोरेटिव सर्कल्स ऐसे भी किए जाते हैं जब कोई नुकसान हुआ ही नहीं हो।
इनका मकसद है रिश्तों को मजबूत करना और लोगों की भावनात्मक सेहत बेहतर करना।



- सब लोग गोल दायरे में बैठते हैं।
- एक बार में सिर्फ एक इंसान बोलता है।
- बोलने की बारी "टॉकिंग पीस" नाम की कोई चीज़ पास करके तय होती है।
- जब तक आपके हाथ में वो चीज़ नहीं आती, आप नहीं बोलते और बीच में किसी को टोका-टोकी नहीं करते।

इन सर्कल्स का इस्तेमाल इन कामों में किया जा सकता है:

- भावनात्मक सेहत और अच्छा माहौल बनाने के लिए,
- किसी कॉमन दिक्कत को मिलकर समझने के लिए (जैसे बीमारी, ग़म, महामारी),
- किसी खुशी को मनाने के लिए (उपलब्धि, त्यौहार),
- किसी को सहारा देने के लिए (जैसे बीमार व्यक्ति, ग़म में डूबा हुआ कोई, या जेल से निकला हुआ इंसान),
- विचार और आइडिया शेयर करने के लिए,
- या झगड़ा सुलझाने के लिए।

रेस्टोरेटिव जस्टिस



Adapted from McCold & Wachtel (2002)

ये तब किया जाता है जब कोई अपराध या गलती हो चुकी हो।
जैसे कोई क्राइम, स्कूल या दफ्तर में लड़ाई।
रेस्टोरेटिव जस्टिस में:

- जिसने नुकसान किया और जिसे नुकसान हुआ – दोनों को बैठाया जाता है।
- और अगर कोई और लोग भी प्रभावित हुए हों तो उन्हें भी शामिल किया जा सकता है।
- सब मिलकर बात करते हैं कि क्या नुकसान हुआ, किसकी क्या ज़रूरत है और नुकसान की भरपाई कैसे हो सकती है।

नुकसान होने के बाद की रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस

कभी-कभी दोनों पक्षों को साथ बैठाना ज़रूरी नहीं होता। अलग-अलग भी ये प्रक्रिया हो सकती है।

- पीड़ित व्यक्ति और उसका परिवार – उनके लिए सपोर्ट सर्कल बनाया जा सकता है।
- जिसने नुकसान किया – उसके लिए परिवार और कम्युनिटी के साथ सपोर्ट और अकाउंटेबिलिटी सर्कल बनाए जा सकते हैं।

ये प्रक्रियाएँ या तो पीड़ित को ठीक होने में मदद करती हैं, या जिसने नुकसान किया उसे ज़िम्मेदारी समझने में।

रेस्टोरेटिव सर्कल्स और रेस्टोरेटिव जस्टिस का आपस में रिश्ता क्या है?

रेस्टोरेटिव जस्टिस तब होता है जब नुकसान हो चुका हो – यानी ये रिएक्टिव है।

रेस्टोरेटिव सर्कल्स बिना नुकसान के भी किए जा सकते हैं – यानी प्रिवेंटिव और रिश्ते मज़बूत करने के लिए।

तो फर्क ये है कि रेस्टोरेटिव जस्टिस सिर्फ गलती या अपराध के बाद काम आता है, लेकिन रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस proactive भी हैं – यानी पहले से रिश्ते मज़बूत करके झगड़े और टकराव को होने से रोक सकती हैं।

इसलिए रेस्टोरेटिव प्रैक्टिसेस सिर्फ क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम तक सीमित नहीं हैं। इन्हें स्कूल, ऑफिस और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

अतिरिक्त सामग्री

पढ़ने की सामग्री:

- Wachtel, T. (2016). *Defining restorative* [Booklet]. Bethlehem, PA: International Institute for Restorative Practices.